P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-II*October-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

जयपुर राज्य में ईसाई मिशनरी और स्त्री शिक्षा

सारांश

राजपूताना में शिक्षा और सभ्यता के इतिहास पर जब दृष्टिपात किया जाता है, तो उसमें जयपुर राज्य का नाम कनिष्ठकाधिष्ठित माना गया है।[1] प्राचीनकाल से ही शिक्षा को, व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने के लिए एवं उसके चहुंमुखी विकास के लिए आवश्यक माना गया है। समाज के निर्माण में यह आवश्यक है कि इसके सभो सदस्य शिक्षा के प्रति जागरूक हो। नारी भी, भारतीय समाज के प्रतिबन्ध के बावजूद शिक्षा से वंचित नहीं रही थी।[2] जयपुर राज्य में स्त्री शिक्षा की पृष्ठभूमि तैयार करने में अनेक तत्त्वों जैसे – ब्रिटिश अधिकारियों, ईसाई मिशनरियों, समाज सुधार संगठनों, जयपुर रियासत के महाराजाओं आदि का अहम योगदान रहा।

मुख्य शब्द : स्त्री शिक्षा, ईसाई धर्म का प्रचार।

अभिलाषा
राजकीय लोहिया,
महाविद्यालय,
चूरू।

प्रस्तावना

ईसाई मिशनरियों का मुख्य ध्येय ईसाई धर्म का प्रचार करना तथा निम्न जाति एवं पीड़ित लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित करना था। अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए लोगों को ईसाई धर्म की ओर आकर्षित करना आवश्यक था और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ईसाई मिशनरियों ने छः तरीके अपनाए जिनमें से प्रमुख हैं – अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से प्रचार, अनाथालय स्थापित कराना, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन, उपदेश देना इत्यादि।[3]

ईसाई मिशनरियों ने राजपूताना समाज में प्रचलित अनेक रूढ़ियों और कुरीतियों का विरोध कर नारी समाज को शिक्षा प्राप्त करने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा दी।[4] मिशनरियों ने स्त्री–पुरुष समानता पर बल दिया तथा नारी को घर की चहारदीवारी से बाहर निकालकर शिक्षित होने के लिए उत्तेजित किया। ईसाई मिशनरीज ने नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए असंख्य सहशिक्षा संस्थान और पृथक् से गर्ल्स स्कूल खुलवाए। 1859 ई. में दो ईसाई पादरी शूलब्रेड और स्टील राजपूताना के ब्यावर शहर में मिशनरी केन्द्र स्थापित करने हेतु भेजे गए।

यूनाईटेड प्रेस्बिटेरियन मिशन अपने धर्म प्रचार हेतु मिशन शिक्षा को एक मुख्य साधन मानता था। ईसाई धर्म प्रचार के लिए अगस्त 1860 ई. में रे. शूलब्रेड ने ब्यावर में प्रथम मिशन स्कूल स्थापित किया।[5] 1862 ई. में लेडी ऐमिली ने नसीराबाद में एक गर्ल्स स्कूल खोला। ईसाई मिशनरीज द्वारा स्थापित गर्ल्स स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ सिलाई, बुनाई एवं कशीदा का काम सिखाया जाता था।[6] 1863 ई. में श्रीमती फिलिप्स ने अजमेर में एक गर्ल्स स्कूल की स्थापना की।

इस स्कूल के संचालकों ने नगर के ओसवाल जैन परिवार की स्त्रियों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया और उनमें शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न की। 1864 ई. मं ईसाई मिशनरी ने ब्यावर में अपना लियो प्रेस स्थापित किया, जहां पाठ्य पुस्तकें और धार्मिक साहित्य छापा जाता था। ईसाई मिशनरियों ने अनेक सांस्कृतिक एवं धर्मनिरपेक्ष शिक्षा केन्द्रों की भी स्थापना की; 19वीं शताब्दी में अजमेर में गवर्नमेण्ट कॉलेज में 1868 इ. में, जयपुर में महाराजा कॉलेज में 1873 ई. में और जोधपुर में जायसवाल कॉलेज 1880 ई. में स्थापित की गई। इन शिक्षण संस्थानों में सहशिक्षा की व्यवस्था थी।[7]1867 ई. में महाराजा रामसिंह के समय डॉ. विलियम कोलीन वेलेंटाइन जयपुर आए। वेलेंटाइन पेशे स डॉक्टर होते हुए भी समाज सेवा से जुड़कर कार्य किए और 1872 ई. में एक स्कूल खोला। 1872 ई. में जॉन ट्रेल और 1876 ई. में मैकालिस्टर जयपुर स्थित स्कॉटिश मिशन से जुड़ गए। जॉन ट्रेल के समय 1872 ई. में 10 मिशनरीज स्कूल थे उनमें 2 पूर्णतः लड़कियों के लिए थे।

इनका कार्यक्षेत्र सौहार्द वातावरण में ही समाज सेवा और शिक्षा देना था। जार्ज मैकालिस्टर के समय स्त्री–पुरुष शिक्षा के महान प्रयास किए गए।

मिस्टर लॉज ने इनके उत्तराधिकारी के रूप में मिशन से जुड़कर सद्भावनापूर्वक कार्य किया। सवाई माधोसिंह के समय चांदपोल में चर्च की स्थापना की गई। मिस्टर लॉज चांदपोल स्थित चर्च संस्था में सभी लोगों से जुड़कर सक्रिय रहे।

यह संस्था लड़कियों के पिछड़ेपन पर बहुत चिंतित थी और लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किए। 1876 ई. म जयपुर में दो एंग्लो–वर्नाक्यूलर स्कूल भी स्थापित किए गए जिनमें कुल 649 विद्यार्थी थे उनमें से 32 लड़कियां थी। 1886 ई. में मिस कैथरीन मिलर ने जयपुर में मिशन संस्था में उल्लेखनीय कार्य किए तथा लड़कियों को घर–घर जाकर भी शिक्षित करने के अभूतपूर्व प्रयास किए। साथ की कैथरीन मिलर ने महिलाओं के प्रति और बच्चियों के माता–पिता को शिक्षा का महत्त्व बताते हुए स्त्री शिक्षा पर बल दिया। स्त्री शिक्षा के लिए कैथरीन मिलर और मिस हैलन सदैव स्मरणीय रहेंगे।[9]

ईसाई मिशनरियों के समाजिक कार्यों में राजपूताने के समाज में शिक्षा का प्रचार करना तो था ही किंतु शिक्षा के माध्यम से लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित करना भी था। ब्यावर के नया नगर क्षेत्र में पादरी शूलब्रेड ने बाबू चिंताराम जो पूर्व में ईसाई धर्म ग्रहण कर चुका था, के सहयोग से एक स्कूल खोला जिसमें हिन्दी, उद्, अंग्रेजी और बाइबिल की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। प्रथम वर्ष में ही इस स्कूल में 69 बच्चों ने प्रवेश ले लिया, इनमें से 54 हिन्दू, 10 मुस्लिम और 5 लड़कियां थी। यह स्कूल शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया क्योंकि यहां सभी जाति के बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाता था। एक वर्ष के अन्दर ही स्कूल में छात्रों की औसत उपस्थिति 100 से भी अधिक हो गई तथा स्कूल की प्रगति संतोषजनक थी।[10]

1872 ई. तक ब्यावर, अजमेर, जयपुर, नसीराबाद और देवली में एंग्लो–वर्नाक्यूलर स्कूलें और 58 वर्नाक्यूलर स्कूलें खोली गई जिनमें से 6 स्कूलें लड़कियों के लिए थी। 1876 ई. में सांभर व फुलेरा में भी मिशन स्कूल स्थापित किए गए।[11] 1872 में मिशनरीज ने लड़कियों के लिए दो गर्ल्स स्कूल खोले जिसमें 32 लड़कियां अध्ययनरत थी। मिशनरियों ने सायंकालीन स्कूलें भी खोली।[12] मिशनरी स्कूलों मे फीस नाममात्र की ली जाती थी, जो एक आना से 8 आना प्रतिमाह थी।

गरीब छात्राओं को पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री मुफ्त वितरित की जाती थी।[13] आर्य समाज की जागृति के कारण मिशनरीज स्कूलों में हिन्दू छात्राओं की कमी हुई परंतु मुस्लिम छात्राओं के नामांकन में वृद्धि देखी गई।[14] ब्यावर में मिशनरीज ने वर्नाक्यूलर प्राइमरी गर्ल्स स्कूल खोला जिसमें हिन्दू–मुस्लिम समुदाय की छात्राएं शिक्षाएं लेती थी। इसमें डॉ. सोलबर्ड ने अच्छा कार्य किया। ईसाई मिशनरियों ने स्कूल और प्रेस स्थापित किए और विदेशी भाषा में शिक्षा दी। प्रारंभिक मिशनरी स्कूल उदार थे। लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी के सत्ता मे आने पर बदलाव आए और उसने सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया।[15]

1909 ई. में डॉ. लियास थामस को मिशन में महिला चिकित्सा कार्य करने के लिए नियुक्त किया गया। उन्होंने भी चिकित्सा के साथ–साथ महिलाओं में शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत की, आगे चलकर मिशन ने लड़कियों के लिए हाई स्कूल खोले जो एंग्लो–वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

लड़कियों के लिए अलग से छात्रावासों की व्यवस्था भी की गई। इसके अलावा मिशन ने अपने भाषणों एवं प्रदर्शनों के द्वारा लड़कियों को शिक्षित होने के लिए प्रेरित किया। ईसाई मिशन का मुख्य लक्ष्य रहता था कि सभी श्रेणियों के लोग साथ–साथ सद्भावना और प्रेम से रहे।[16] 1914 ई. में बांदीकुई में लड़कियों के लिए मिशनरीज स्कूल खोली गई। 1915 ई. तक मिशनरीज संस्थाओं में परीक्षण के तौर पर फीस ली गई। 1919 ई. में बी. एस. पाल और एस. पी. एंड्रूज के समय शिक्षा के द्वारा छात्र–छात्राओं का चहुंमुखी विकास किया गया।[17]

सेंट ऐंजेला गर्ल्स स्कूल अजमेर में मुख्य रूप से लड़कियों के लिए खोली गई। 1926 ई. में सेंट ऐजेला गर्ल्स स्कूल को अजमेर से जयपुर स्थानान्तरित किया गया। जयपुर में घाटगेट के पास स्थित यह स्कूल 1927 ई. में दुर्घटना का शिकार बनी। बाद में धन्यवती इस स्कूल की प्रधानाध्यापिका बनी और हिंदुओं के लड़के पढ़ने लगे। 1931 ई. में सेंट ऐंजेला गर्ल्स स्कूल को मिडिल स्कूल के रूप में मान्यता मिल गई।[18] सेंट जेवियर, सेंट मेरी और सेंट ऐंजेला गर्ल्स स्कूल जयपुर राज्य में आज भी हैं जो सभी प्रकार की शिक्षा का आधार बनी। ईसाई मिशनरियों द्वारा 1934 ई. में जयपुर राज्य के चांदपोल में स्कूल खोला गया, जिसे 1944 ई. तक सरकारी अनुदान प्राप्त था। ईसाई मिशनरीज ने कायस्थ समुदाय की लड़कियों के लिए जनाना मिशनरीज स्कूल खुलवाया। मिशनरीज ने रनिवासों अर्थात उच्च घरानों में स्त्री शिक्षा के लिए भी जनाना मिशनरीज खुलवाए। इनके अन्तर्गत पर्दे में शिक्षा दी जाती थी।[19]

ईसाई मिशनरियों तथा ईसाई धर्म प्रचारकों ने जयपुर राज्य में नारी समाज में प्रचलित अनेक रूढ़ियों व कुरीतियों जैसे सती प्रथा, कन्या वध, बाल विवाह, अस्पृश्यता, बहुपत्नी विवाह, देवदासी प्रथा आदि की ओर हिन्दुओं का ध्यान आकर्षित किया। ईसाई धर्म प्रचारकों ने राजपूताने को स्त्रियों की दशा सुधारने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्त्रियों को घर की चहारदीवारी से बाहर निकालकर कार्य करने की स्वतंत्रता का समर्थन किया।[20] ईसाईयत ने स्त्री समाज में प्रचलित बाल विवाह एवं बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया तथा विधवा एवं अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया।

इससे राजपूताने के समाज में पत्नी को मित्र और सहयोगी की महत्ता पुनः प्राप्त हुई। जे. एन. सरकार के अनुसार, ''19वीं शताब्दी में पाश्चात्य संस्कृति व ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से जयपुर राज्य ने ऐसे कानून बनाए, जिनके कारण जनमत बदल गया आर स्त्रियों को हीन समझने वाले राज्य उनका आदर करने लगे। रखैल स्त्रियों के हाथ को जो घातक प्रभाव बच्चों पर पड़ता था, उसे खत्म कर दिया गया। इसी समय स्त्री शिक्षा की भी

स्वतंत्रता मिल गई जिससे राष्ट्र की शक्ति दुगुनी हो गई।''[21] ईसाई मिशनरीज के कार्यक्रमों में प्रमुख है – सभी समुदायों के लोग सद्भाव व प्रेम से रहे, बाल कल्याण, अच्छे नागरिको का निर्माण, आपसी धैर्य एवं सामाजिक सामंजस्य बनाए रखना और परोपकारी कार्य इत्यादि।[22]

1901 ई. के बाद जयपुर राज्य के सीमित साधनों को ईसाई मिशनरियों द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार में लगा दिया गया। ईसाई मिशनरियों एवं अंग्रेजों के द्वारा संचालित कन्या विद्यालयों में अच्छे परिवारों और उच्च कुल की लड़कियां बहुत कम जाती थी क्योंकि यह समझा जाता था कि यह संस्थाएं निम्न वर्गों के बच्चों को ईसाई धर्म सिखाने के लिए खोली गई हैं।[23] कुछ सामाजिक भेदभाव और कुछ इस शिक्षा की उपयोगिता की अनुपयोगिता लड़कियों को आधुनिक शिक्षा की ओर आकर्षित नहीं कर सकी। लड़कियों में यह शिक्षा बीसवीं सदी में ही लोकप्रिय हो सकी वह भी उसी स्थिति में जब स्थानीय लोगों अथवा संस्थाओं ने शिक्षा संस्थाएं खोली और उनमें अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजा।[24]

ईसाई मिशनरीज स्कूलों पर आरोप लगाया गया कि इन्होंने ईसाई धर्म प्रचार एवं बाइबिल पढ़ाने का उद्देश्य रखा। यद्यपि प्रारम्भिक चरण में उनका लक्ष्य कुछ सीमा तक सीमित रहा हो परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में तथा विशेषतः स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। शिक्षा के क्षेत्र में अजमेर में जेवज केरी ने, ब्यावर में शूलब्रेड ने, नसीराबाद में मार्टिन ने, जयपुर में डॉ. कोलिन वेलेंटाइन ने, उदयपुर में निक्सन ने, खेरवाड़ा में थामसन का योगदान उल्लेखनीय रहा है। लेकिन उनको शिक्षा के प्रसार में अनेक बाधाओं का भी सामना करना पड़ा, जैसे–विषम जलवायु, साधनों की कमी, योग्य स्त्री–पुरुष शिक्षकों की कमी, संचार साधनों की कमी, पर्याप्त कार्यालयों का अभाव, लोगों का अंधविश्वास आदि।[25] फिर भी ईसाई मिशनरियों का स्त्री शिक्षा में सराहनीय योगदान रहा। मिशनरियों ने छात्र–छात्राओं के बहुमुखी व्यक्तित्व का निर्माण, आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता में योगदान, शिक्षण में विविधता, धर्मनिरपेक्षता की भावना का विकास तथा छोटे कस्बों तक शिक्षा का प्रसार किया। ईसाईयत ने सहशिक्षा के साथ–साथ स्त्री शिक्षा के लिए अलग से व्यवस्था की। ''वूमन इंडस्ट्रीयल होम्स'' में पीड़ित छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने की शिक्षा दी गई। ईसाई मिशनरियों द्वारा निम्न वर्ग के लिए भी शिक्षा का प्रावधान किया गया चाहे उन्हें वह वर्ग ईसाई प्रचार के लिए मिला हो। मिशनरियों ने हिन्दू समाज में फैली बुराईयों–सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या वध, बहुविवाह इत्यादि रूढ़ियों का विश्लेषण बड़े तर्क संगत ढंग से किया तथा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने हेतु जनमानस को तैयार किया। ईसाई मिशनरियों से प्रभावित होकर ही भारतीय समाज में आर्य समाज, ब्रह्म समाज और रामकृष्ण मिशन आदि आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ।[26]

हालांकि ईसाई मिशनरीज की शिक्षा की धुरी अजमेर–मेरवाड़ा और जयपुर तक सीमित रही।[27] उत्तर–पश्चिमी राजपूताना इसके प्रभाव से वंचित ही रहा। फिर भी मिशनरोज पादरियों ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने में अहम भूमिका अदा की। उन्होंने नारी शिक्षा पर अत्याधिक जोर दिया ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके। मिशनरियों के शैक्षणिक, मानवतावादी और सामाजिक क्षेत्र में किए गए रचनात्मक कार्यों ने आधुनिक समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।[28] आज भी प्रदेश में सेंट जेवियर, सेंट ऐंजेला, सेंट मेरी और सोफिया जैसे मिशनरीज विद्यालय शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं।

Reference

1- शास्त्री, प्रभाकर, ''जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन,'' पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर 1980 पृ. 25
2- अरोड़ा, डॉ. शशि, ''राजस्थान में नारी की स्थिति,'' तरूण प्रकाशन, बीकानेर 1981 पृ.92
3- व्यास, डॉ. प्रकाश, ''राजस्थान का समाजिक इतिहास,'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2001 पृ. 273
4- नागौरी, एस. एल.; नागौरी, श्रीमती कान्ता, ''राजस्थान का इतिहास'' पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर 1999 पृ. 192
5- नागौरी, एस. एल.; नागौरी, श्रीमती कान्ता, ''राजस्थान का इतिहास'' पृ. 193, पृ. 181
6- शर्मा, डॉ. कालूराम, ''उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का समाजिक एवं आर्थिक जीवन'', ''राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1974, पृ. 148
7- जैन, एम. एस., ''आधुनिक राजस्थान का इतिहास'', पंचशील प्रकाशक, जयपुर, पृ. 131
8- Jain, Kesharlal Ajmera, "The Jaipur Album", Chapter XIX, The Rajasthan Directories Publishing House, Jaipur City, 1935 Page-5
9- Jain, Kesharlal Ajmera, "The Jaipur Album" Chapter XIX Pate-6
10- व्यास, डॉ. प्रकाश, ''राजस्थान का समाजिक इतिहास'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 275
11- शर्मा, डॉ. कालूराम; व्यास, डॉ. प्रकाश, ''राजस्थान का इतिहास'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2002 पृ. 387
12- Verma, G.C., "Modern Education", Publication Scheme, Jaipur-Indore, 1984, Page-78
13- व्यास, डॉ. प्रकाश, ''राजस्थान का सामाजिक इतिहास'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2001 पृ. 275–276
14- Verma, G.C., "Modern Education", Publication Scheme, Jaipur-Indore 1984, Page-72
15- Verma, G.C., "Modern Education" Page 63, 53
16- Jain, Kesharlal Ajmera, "The Jaipur Album", Chapter XIX The Rajasthan Directories Publishing House, Jaipur Page-6
17- Verma, G.C., "Modern Education" Page 77, 78, 79
18- Verma, G.C., "Modern Education" Page 93, 94
19- Verma, G.C., "Modern Education" Page 103, 78, 79

20- नागौरी, एस. एल.; नागौरी, श्रीमती कान्ता ''राजस्थान का इतिहास'' पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर पृ. 192, 193
21- नागौरी, एस. एल.; नागौरी, श्रीमती कान्ता ''राजस्थान का इतिहास'' पृ. 191, 193
22- Jain, Kesharlal Ajmera, "The Jaipur Album", Chapter XIX Page-6
23- दिवाकर, प्रो. बी. एम. ''राजस्थान का इतिहास'', साहित्यागार, जयपुर, पृ. 382
24- जैन, एम. एस., ''आधुनिक राजस्थान का इतिहास'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृ. 252
25- Verma, G.C., "Modern Education" Page 240-246, 95-102
26- नागौरी, एस. एल.; नागौरी, श्रीमती कान्ता ''राजस्थान का इतिहास'' पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर पृ. 193
27- Verma, G.C., "Modern Education" Page 102
28- व्यास, डॉ. प्रकाश, ''राजस्थान का सामाजिक इतिहास'', पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृ. 27

Subscription/Declaration Form for the Publication of Paper in Journals/Magazine

Distributed by

Social Research Foundation

A Non-Governmental Organization
No. 6732/K-44490 * 1309/31-01-2011
128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208 011

Contact : **Rajeev Misra** (Secretary)
Mob. : 0512-2600745, 9335332333, 9839074762
web : www.socialresearchfoundation.com
e-mail : socialresearchfoundation@gmail.com
Facebook ID : rajeevmisra.socialresearchfoundation

Personal Details

Name :..
Designation :..
Department :..
Name of Institution:..
....
Address of Institution:..
....
City.........................Pin....................Country...........
College Website:..
Residential Address (where journal to be post)
....
....
City.........................Pin....................Country...........
Phone.........................Mobile..................................
E-mail:..

Signature Date Introduced by

Payment Details (Any type of payment is not refundable)

I wish to **subscribe** ☐ **renew my subscription** ☐
present a paper/article ☐ in your reputed journals/magazine.

Subscription Type
One Year ☐ Five Year ☐ Lifetime ☐ Paper Presentation ☐

Subscription For
Asian Resonance ☐ Periodic Research ☐ Srinkhala ☐
Remarking ☐ Any Other..

Mode of Payment
Bank Draft / Cheque No. .... Date.........................
for Rs./US$........................drawn on..
in favour of **"Social Research Foundation"** payable at Kanpur.
In case of On-line pay (Transaction ID/UTR)....................................
transfer in **Indian Bank, Saket Nagar, Kanpur** Branch
Account No. 933846442 ☐ 957376282 ☐ for Rs.....................
IFS Code : IDIB000S150, **CBS Code :** 01628
Any other Remark / Instruction ....

- Please add Rs. 100/- towards bank charges, in case of outstanding cheques.
- Payments from abroad must be sent through Bank Draft only.

Declaration Form by the Author(s) (Please read it carefully)

Photo of Author

Subscriber/ Author's Name
....
Co-Author's Name
....

Photo of Co-author

I, hereby, declare that this paper/article titled ....
....
....
and other information given in this form are true and original. Also, it is declared that above paper/article is not copied or not under review for another publication and not yet published anywhere and the above paper is within 5000 to 5500 words. The opinions and statements published are the responsibilities of mine/us and not policies overviews of the editor. **Publisher are fully authorize to publish my/our paper/article in any of the publication (Asian Resonance/Periodic Research/Shrinkhala) according to the quality of the paper / language / review process of their policies.**

Also, it is in my knowledge that for publication, all rights reserved by Publisher, no part of their publication may be reproduced, stored in a retrieval system, used in a spreadsheet, or transmitted in any means- electronic, mechanical, photocopying or otherwise without prior permission in writing. The articles/papers originally published in other magazines / journals are reprinted with permission Publisher holds the copyright of the selection, sequence, introduction material, value addition, questions at the end and illustration.

The views expressed in these publications are purely personal judgements of the author(s) and do not reflect the views of the institute or the organizations with which they are associated.

All efforts are made to ensure that the published information is correct. The "Social Research Foundation"/publisher is not responsible for any error caused due to oversight or otherwise.

The publisher is not responsible for any discrepancy / inaccuracy in the paper / material / data provided by the Author(s). In case of any nuisance, the author(s) will be responsible for the inaccuracy / discrepancy and any type of claim.

All disputes will be subject to Kanpur Jurisdiction only.

Signature of Author Signature of Co-author

Please note that if any matter found copied from any sources, fee will not be refunded and against such author(s) legal action may be taken under copy right act by competent authorities.